प्रकरण ४ भारतीय थलसेना

भारतीय थलसेना तीनों सेनादल में सर्वाधिक प्राचीन सेना विभाग है । सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य के जमाने से अर्थात दो हजार सालों की अति प्राचीन तथा उच्चतम विरासत भारतीय थल सेना को प्राप्त है ।

आजकल के भारतीय थलसेना की नींव अंग्रेजों के जमाने में डाली गई थी । स्वतंत्रतापूर्व काल में नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने भारत को स्वतंत्रता दिलाने के लिए 'आजाद हिंद-सेना' का नेतृत्व किया । उन्होंने इस सेना में महिलाओं को भी सहभागी किया था । कैप्टन लक्ष्मी स्वामीनाथन इस महिला दल की प्रमुख थीं ।

भारतीय थलसेना की भूमिका

बाहरी आक्रमण और आंतरिक अशांति से राष्ट्रहित की रक्षा करना थल सेना की महत्त्वपूर्ण भूमिका है । यह भूमिका सफलता से निभाने और निम्न कार्यवाही के लिए थलसेना को तत्पर रहना पड़ता है ।

- बाहरी आक्रमण को नष्ट करने के लिए युद्ध करना और हमेशा सतर्क रहना ।
- देश के आंतरिक खतरों को रोकने के लिए आंतरिक सुरक्षा व्यवस्थापन को सक्षम बनाना ।
- आवश्यकता के अनुसार राष्ट्रहित को संभालने के लिए सेना बल का उपयोग करना ।
- मित्र देशों तथा युनो के शांतिपूर्ण कार्यवाहियों में सहयोग देना ।
- मानवीय तथा प्राकृतिक आपदाओं के समय सहयोग करना और नागरी अधिकारियों की मदद करना आदि ।

सेना का भौगोलिक विभाग और नियंत्रण

देश का भौगोलिक आकार तथा विस्तार और सुरक्षा के संभाव्य खतरों के आधार पर भारतीय सेना का छह कार्यात्मक विभागों में (कमांड) विभाजन किया है । ये विभाग पूरे देश में बिखरे हुए हैं । इस विभाग का २ से ३ सेना भागों में (कोर) विभाजन किया जाता है । ये सेनाविभाग फिर से २ से ३ सैनिकी विभागों में बँटे हैं और इन सैनिक विभागों का विभाजन ४ से ५ ब्रिगेड में किया जाता है । हर ब्रिग्रेड में ३ से ४ बटालियन अथवा रेजिमेंटस होते हैं । बटालियन का विभाजन फिर से कंपनी, प्लाटून और सेक्शन में होता है । एक सेक्शन में १० सैनिक होते हैं और यह सेना का सबसे छोटा और स्वयंपूर्ण लड़ाकू गुट होता है ।

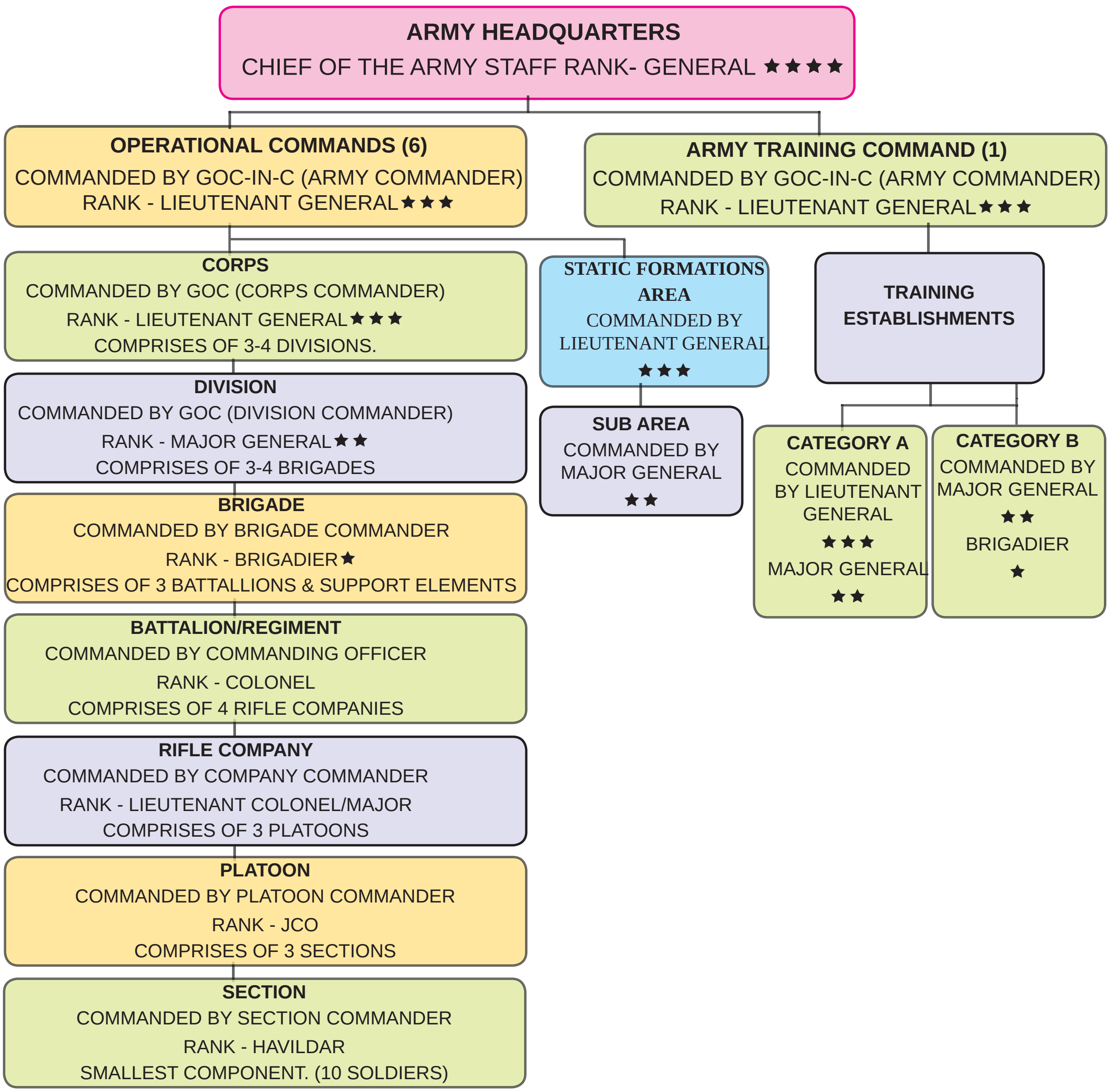

भारतीय सेना के कार्यात्मक विभाग

१) उत्तर विभाग (नार्दर्न कमांड) :

इस विभाग का मुख्यालय उधमपुर में है । पूर्व दिशा की ओर चीन, तो पश्चिम दिशा की ओर पाकिस्तान इन राष्ट्रों से सुरक्षा करना इस विभाग की प्रमुख जिम्मेदारी है । जम्मू-काश्मीर का प्रदेश इस विभाग का कार्यक्षेत्र है ।

२) पश्चिम विभाग (वेस्टर्न कमांड) :

इस विभाग का मुख्यालय चंडीगढ़ में है । पूर्व दिशा की तरफ हिमाचल प्रदेश इसका कार्यक्षेत्र है । पश्चिम दिशा की ओर पाकिस्तान से तथा पूर्व दिशा की ओर चीन से सुरक्षा करना इसका कार्य है ।

३) दक्षिण-पश्चिम विभाग (साउथ वेस्टर्न कमांड) :

इस विभाग का मुख्यालय जयपुर में है । उत्तर और मध्य राजस्थान तथा हरियाणा इस विभाग के कार्यक्षेत्र हैं ।

४) दक्षिण-विभाग (सदर्न कमांड) :

इस विभाग का मुख्यालय पुणे में है । दक्षिण राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, तेलंगाना और आंध्रप्रदेश ये इस विभाग के कार्यक्षेत्र हैं ।

५) मध्य विभाग (सेंट्रल कमांड) :

इस विभाग का मुख्यालय लखनऊ में है । उत्तराखंड, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, ओड़िसा, झारखंड और छत्तीसगढ़ ये इस विभाग के कार्यक्षेत्र हैं । उत्तराखंड में चीन तो उत्तरप्रदेश तथा बिहार में भारत-नेपाल सीमा सुरक्षा की जिम्मेदारी मध्य विभाग की है ।

६) पूर्व विभाग (ईस्टर्न कमांड) :

इस विभाग का मुख्यालय कोलकाता में हैं । सिक्किम, भूटान, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, मणिपुर, त्रिपुरा, मिजोरम इन क्षेत्रों की सुरक्षा इस विभाग की जिम्मेदारी है । उसी प्रकार भारत-नेपाल सीमा, म्यानमार और बांग्लादेश इन सरहदों की जिम्मेदारी भी इसी विभाग की है ।

(७) प्रशिक्षण विभाग :

भारतीय सेना के छह कार्यात्मक विभागों के अलावा एक स्वतंत्र प्रशिक्षण विभाग है । थलसेना का प्रशिक्षण इसकी मुख्य जिम्मेदारी है ।

थल सेना का संगठन और रचना

प्रमुखतः लड़ाकू विभाग और पूरक सेवा विभाग ऐसे दो प्रकारों में थल सेना के विविध विभागों का संगठनात्मक विभाजन किया गया है ।

अ) लड़ाकू और लड़ाकूपूरक गुट :

इसमें प्रत्यक्ष युद्धभूमि पर लड़ने वाले सेना के गुटों का समावेश होता है । जैसे

बख्तर (कवच) दल

तोपखाना

अभियांत्रिकी गुट

थलसेना

संपर्क गुट

थलसेना हवाई सुरक्षा गुट

थलसेना हवाई गुट

थलसेना का शत्रु के बारे में ज्ञान विभाग

आ) पूरक सेवा गुट

थलसेना पूर्ति विभाग (ASC)
खाद्यान्न, यातायात और पेट्रोलियम पदार्थ,

युद्धसामग्री विभाग (AOC)
गोला बारूद, शस्त्रास्त्र, यातायात के साधन
कपड़े तथा अन्य सामग्री- थलसेना

अभियांत्रिकी विभाग (EME)
शस्त्र और साहित्य मरम्मत और देखभाल
इलेक्ट्रॉनिक्स और तंत्र

वैद्यकीय सेवा तथा उपचार (AMC)
थलसेना का वैद्यकीय विभाग

दंतचिकित्सा विभाग (ADC)
दंत चिकित्सा तथा उपचार-थलसेना का

मानव विकास (AEC)
थलसेना का शिक्षा विभाग

पशुवैद्यकीय विभाग (RVC)
(घोड़े, श्वानपथक, खच्चर आदि)

सैनिकी पुलिस (MP)
यातायात नियंत्रण तथा अनुशासन

कानून विभाग (JAG)

पायोनिअर (PIONEER) युद्ध भूमि में आगे तथा
पीछे कार्यरत सेना कामगार

उपक्रम

१. थलसेना के लड़ाकू गुट के जोड़े मिलाएँ (छायाचित्र के आधार पर)

थलसेना	○	A	
तोपखाना	○	B	
अभियांत्रिकी विभाग	○	C	
थलसेना हवाई सुरक्षा गुट	○	D	
सुरक्षा दल	○	E	
संपर्क विभाग	○	F	

२. थलसेना का रचनात्मक प्रारूप (Ranks) तालिका तैयार कर कक्षा में दर्शनी भाग में लगाए ।

JBCEX1